हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद्

दूरभाष संख्या- 0172-2570743
इमेल- chairpersonhshec@gmail.com

तकनीकी शिक्षा सदन
सैक्टर-4, पंचकुला -134112

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक : 22/02/2022

भारत की अस्मिता को समझने के लिए मातृभाषा को जानना जरूरी-प्रो. बेदी

पंचकुला, 22 फरवरी

मातृभाषाओं का विकास पूरे दक्षिण एशिया के देशों में ज्ञान की एक नई परंपरा चला सकती है। विकसित हो रहे एशिया के देश अगर अपनी मातृभाषा से जुड़ते है तो वे विकास का एक नया मापदंड बना सकते है। इन देशों के लोकतंत्र में मातृभाषा प्रफुल्लित हो सकती है। मातृभाषा का विकास राष्ट्रीय विकास से जुड़ा है। मातृभाषाओं को जानने और मनन करने से ही भारत की अस्मिता को समझा जा सकता है। भारत में दो सौ से अधिक मातृभाषाएं बोली जाती है। उनका अस्तित्व है, उनकी अपनी शैली है। देश में बोली जाने वाली भाषाएं अभिव्यक्ति का बड़ा माध्यम है। लोक साहित्य के माध्यम से उनका साहित्य और परंपरा आज भी उपलब्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए मातृभाषाओं में पढ़ने-पढ़ाने एवं सीखने-सिखाने पर जोर दिया गया है। वर्तमान में शिक्षा को सर्वग्राहय एवं सहजता से अनुकरणीय बनाने के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण में मातृभाषाओं का समावेश नितान्त अपेक्षित है। उक्त बातें हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद् द्वारा आयोजित संगोष्ठी में हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के कुलाधिपति प्रो.(डॉ.) हरमहेन्द्र सिंह बेदी ने कही। प्रो. बेदी अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर सोमवार को परिषद् कार्यालय सभागार में प्रदेश के सभी राजकीय एवं निजी विश्वविद्यालयों के कुलपति, कुलसचिव, अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष को ऑनलाइन तथा मौलिक शिक्षा, विद्यालय शिक्षा, उच्चतर शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के वरीय पदाधिकारियों को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित कर रहे थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के निर्माण के लिए बनी समिति में शामिल प्रो. बेदी ने कहा कि पश्चिम के देश पहली बार चर्चा कर रहे है कि भारत पहली बार अपनी शिक्षा नीति के साथ मातृभाषाओं के माध्यम से जुड़ रहा है। उन्होंने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृभाषा में बोलने, पढ़ने, लिखने और संपर्क स्थापित करने का अधिकार है।

राष्ट्रीय स्तर पर संवाद की भाषा की आवश्यकता – प्रो. कुठियाला

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष प्रो. बृज किशोर कुठियाला ने कहा कि भारत के पुरातन ज्ञान के प्रति श्रद्धा और भविष्य निर्माण के लिए जारी प्रयासों एवं निर्धारित लक्ष्यों को पाने में संवाद की भाषा के स्तर पर एकरूपता महत्वपूर्ण है। इस विषय की दिशा में हमारे बौद्धिक समुदाय को विचार करना चाहिए। प्रो. कुठियाला ने कहा कि बौद्धिक समुदाय को राष्ट्र के संवाद की भाषा का विचार करना चाहिए। हमारे

पास वैज्ञानिक भाषा है, वह ध्वनि विज्ञान पर आधारित भाषा है। उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य पर सभी को मातृभाषाओं के सम्मान एवं संरक्षण का दायित्व लेना चाहिए। परिषद् के अध्यक्ष प्रो. कुठियाला ने बताया कि हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा बोल-चाल की पांच सौ शब्दों के चयन की परियोजना तैयार की गई है, जो भारतीय सभी भाषाओं को एक सूत्र में बांधने का कार्य करेगा। उन्होंने संगोष्ठी में उपस्थित सभी व्यक्तियों से इस परियोजना में योगदान करने का आह्वान भी किया। प्रो. कुठियाला ने कहा कि देश में भाषाई एकता की परिकल्पना को साकार करने के लिए भारतीय संविधान में उल्लेखित 22 भाषाओं के स्तर पर एक विशेष शब्दकोश का निर्माण की प्रक्रिया जारी है। संगोष्ठी में प्रदेश के निजी एवं राजकीय विश्वविद्यालय, शिक्षा निदेशालय हरियाणा के अधिकारियों ने मातृभाषा में सिखना एवं सीखाना विषय पर आयोजित चर्चा में भाग लिया। संगोष्ठी में विषय प्रस्तावना परिषद् के सहायक प्राध्यापक डॉ. अमरेन्द्र कुमार आर्य ने रखी एवं सभी आगत अतिथियों का धन्यवाद परिषद् के सलाहकार के.के. अग्निहोत्री ने व्यक्त की।

भवदीय

(डॉ. अमरेन्द्र कुमार आर्य)
जनसंपर्क एवं प्रकाशन प्रभारी
हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद
मो. 9584557055